।।मरणरहित महज्जीवन।।

(THIRUARUTPA-DEATHLESS GREAT LIFE)

HINDI LANGUAGE

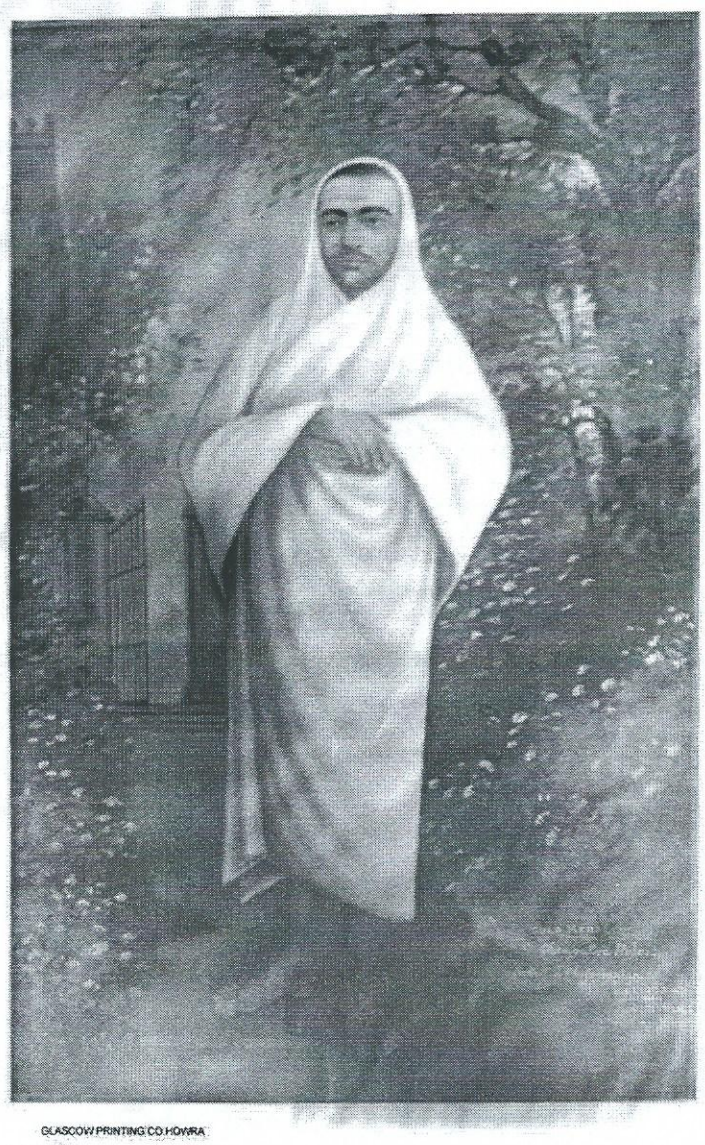

GLASCOW PRINTING CO HOWRA

अनु ग्रहरूपमहज्ज्योति अनु ग्रहरूपमहज्ज्योति।

अद्वितीयकरुणाज्योति अनु ग्रहरूपमहज्ज्योति।।

1. सोच सोचकर अनुभव से आस्वादन से तुम्हे!

भरा आँख से छलकता हु वाआँशु

भीग भीगकर अनुग्रह के अमृत शुभनिधि वही

ज्ञाननर्तन करनेवाला मेरा पति और नायक तूही!

आइए सबमिलकर प्रणाम करेंगे आइए हे लोकजन!

मरणरहित महज्जीवन जीएँगे देखो!

अतिशय नही, असत्य नही, सत्य ही कह रहा हूँ।

हिरण्यसभा-सूक्ष्मसभाओं मे प्रवेश करनेका समय यही है।

2. प्रवेश समय यही है देखिए हे प्रियजन! मै ही

कह रहा हूँ मेरा कहना अनृतवचन जैसे मत सोचो!

प्रणान्तकाल मे माता-पिता, इष्टजन,

धनसंपति, साथ नहीं आएँगे।

अत्यन्तरूचिदायक इक्षुरस! लालफल! शिखरमधु!

सत्फलित! अमूल्यमणि! अपूर्व!

अद्वितीयमहत्पति! दयानिधि! जीवन, सत्य

मानकर अर्चनकरो, भक्ति से स्वामि को नमस्कार करो।

3. विनम्रपूर्वक भाव से गाइए हे लोकजन!

हे परम्पर! चिदम्बर! परापर! वर!

खण्डन करके प्रकटहु आवेदान्तशुद्धसिद्धान्त अनुभवरूप!

तुरीयशिखर अनुभवकारक! शुद्धसिद्धान्त!

अद्वैतस्थिति महत्सुखदात! समरससन्मार्गसत्य

प्रदात! प्रकृतिसत्य एकैकपति कहकर

पूर्णएकाग्रमन से स्मरण करनेसे उसी क्षण

सभी अद्भुत दृश्य देखेंगे आवो!

4. देखाहु आसब झूठ, सुना हुआ अशास्त्र

पढ़ा हुआ सब असत्य और वृथा

खाया हु आमल ही है। सोचा हु आलोप ही

लोकजन! अबतक सचको क्यों नहीं जाने?

कहने क्या हैं? अब तुम समरससन्मार्ग

सत्यमार्ग द्वारा सत्यवस्तु को अनुभव से जानकर

सूक्ष्मालय में रहा हु आस्वामि अनुग्रह लीजिए

मृत्युञ्जयवर पायेंगे आनन्द को अनुभव करेंगे।

5. आनन्द पायेंगे, त्रिलोक पूजाकरेंगे हमारी

सर्वसमर्थसिद्धि और दैवत्व पाएँगे।

हे प्रियजन! इधर आवो समरससन्मार्ग पहूँचकर

अन्तःस्वरूप हिरण्यस्वरूप बनके

पिगला हु आस्वर्णप्रकाश के प्रकाश! ज्ञानामृत!

ज्ञानपूरण! वेदान्तशिखर की अर्थरूप!

दुष्टजनों केलिए दुर्लभमणि! सूक्ष्मसभा के

महौषध! स्मरणकरने से सभी पाप दूर हो जाएँगे।

6. मेरी बुरइयाँ को माफकर उन्नतमनसे अनुग्रहकर

बालक को ज्ञानदानसे अनुग्रहामृत देकर सामर्थ्य से

मृत्यु को हठाकर प्रकृति आनन्द अनुभवस्वरूप

आलय मे स्थित हु आअनुग्रहमहज्योति को

करूणास्वरूप से मन मे बसाकर

अद्वैतवस्तु को, महत्करूणारूप महापति का

शरणलेकर मृत्युरहित सुख पायेंगे लोकजन!

यही शुभसमय अत्यन्तशीघ्र आइएँ।

7. तु गैर नही। मै तेरा प्रियमित्र नही?

बडाबात कहरहा हुँ परन्तु असत्यबात नही।

मुझे शरणदेकर और अनुग्रहामृत देकर इतना महत्वपूर्ण किया

अद्वितीय महत्सुख दिया हु आएकैक महत्पति

महत्वसे शुभदिन मे पवित्रदेहधारण करके

सिद्धलीला करने का महद्दिन सामने है।

यही है शुभ समय लोकजन! इधर आओ!

सब कुच सोचा हु आपायेंगे शीघ्र।

8. शीघ्र ही पाएँगे हे मेदिनीजन!

सच ही कहरहा हूँ अन्यथा मत सोचो।

प्रभु के लीलासे वृद्धा भी यौवन को पायेंगे।

मृतलोग जीवित हो उठेंगे।

शीघ्र शीघ्र से सर्व करने वाला प्रभु और सिद्धपुरुष

आनेका समय यही हैं, वर पाएँगे आप

रो रो कर मन घुलके आँखों से पानी बरसता

करूणानर्तनरूप भगवान को दिलमे रखो खुशीसे!

9. चिरकाल आनन्द से भूलोक मे

जीवन केलिए अनुग्रहमहज्योति प्रभु के

प्रकटहोने का समय कब ऐसा मतसोचो? वो यही है।

मृतजन को उठानेका आश्चर्य समय यही है। हे लोकजन!

छुपाकर नही कह रहा हुँ दृढस्वर से घोष करता हुँ

कुछ भी डर नही यथार्थग्रहण करके कह रहा हुँ

सुक्ष्मालय मे मेरे पिता से अनुग्रह पाने केलिए

इच्छा है तो आइए इधर हे मित्र!

10. इच्छा है तो इधर आइए अनुग्रहमहज्योति, महत्पुरुष

माता-पिता जैसा अनुग्रहदेनेवाला करुणामूर्ति

पापसब विमुक्तकरके रक्षा एवं सोचा वर देकर

सर्वकरनेवाला सिद्धपुरुष मेरे साँस में लीन हु आ।

प्रकाश सहज अनुग्रहमहत्नर्तन करने केलिए

निष्कलङ्कमन से अनुग्रहदेने केलिए प्रत्यक्षहोने का शुभदिन यही हैं।

ठुकराना बात नही है भ्रम न मानो लोकजन! आयिए

त्रिकाल मे भी नाशरहित वर पाने केलिए।

11. पाएँगे हे लोकजन! यही है शुभ समय।

अनुग्रहमहज्योति, महत्पति, मेरे पिता के आनेका समय।

अपुरूपदैवामृत को आनन्दसे देकर अनुग्रहप्रदान किया मुझे।

आपको अदृश्य दृश्य दिखानेका समय यही है।

सन्देह से इधर उधर मत भ्रमण करो! मेरे जैसा सुख पाओगे

हम दोनों मे भेद नहीं हैं सही कहरहा हूँ।

अधूरे मत के बिलसे बाहर आकर सत्यको जानो!

नाशरहित मर्ग़ सन्मार्ग, पवित्रमार्ग को पाकर आया हूँ।

12. पवित्रमार्ग एक ही, वही समरससन्मार्ग,

शिवमार्ग जानकर लोकजन आइए! इस

मार्ग मे रक्षा करके अनुग्रहदिया हु आ

करूणामूर्ति, शक्तिप्रदाता दिव्यमूर्ति

महत्मार्ग मे लीलाकरके स्वच्छमनसे अनुग्रहरूप

महत्करुणास्वरुप से प्रकट होनेका समय यही है।

दुष्टमार्ग पे मत चलो! चञ्चल मत हो!

तीक्ष्णबुद्धिसे एकाभिप्राय से सत्य को कहरहा हूँ।

13. सच को ही कहरहा हूँ मुझमे समागम करो हे लोकजन!

मेरा वचन को सन्देह से लेकर अस्थिरत्व न पाओ!

मुझे आम मानव मत समझो सर्वसमर्थ मुझ

मे बैठकर बोलरहा है सुनो! यह

स्पष्टरूपसे शुद्धशिवसन्मार्ग को

आचरणकरके शीघ्र ज्ञान पाओ! सत्यजीवन देने केलिए

दर्शनरूप, वैशिष्ट स्तुति पाने वाला भगवान

करूणानिधि आनेका समय यही है।

14. स्वयं वही ब्रह्माण्ड, फिरभी दरिद्र जैसा

एक ही स्वामि मेरा माता-पिता

आकाश, आकाश का मूल, उस मूल का प्रारम्भ

दयाप्रभु कहकर भक्तलोग ध्यानकरने केलिए

अन्तरङ्ग मे स्थित मधुर! मीठाश्वेतामृत को

सूक्ष्मसभा मे महज्जीवन का ध्यान करो। लोकजन!

जन्मलिया शरीर नाश नही होगा, प्रतिप्रलयकाल पूजित सदृश

अत्यन्त महत्सिद्धि को पाएँगे। यही सत्यवचन।

15. उन्नत जाना हु आसत्यवेदान्त सिद्धान्त

ज्ञान स्वयं अपूरूप यथार्थज्ञान

नित्यसूक्ष्मसभामध्यमे पूर्णनर्तन करने वाले

नित्यपरिपूर्ण, नरशिखामणि,

एक महत्पति और अपुरूप औषध को, सर्वज्ञ दयानिधि के

आत्मा को मेरे आत्मा मे प्रतिष्ठित किया,

पूर्णशक्ति दिया शिवगति को, हे लोकजन!

ध्यान से स्तवन करो सभी पाप छुट जाएँगे।

16. निन्दा रहित मन मे बसाया महज्येष्ठ को,

सर्वस्थिति दिखाके अनुग्रहदिया गुरु को,

मेरे माता-पिता को आँखो के दोनों पुतलियाँ,

मेरे प्राण, भाव एवं बुद्धि के बुद्धि को,

मेरे ध्यान मे स्थित महत रूचि को, श्वेतामृत

सर्वसमर्थ महत्प्रभु शिवजी को, लोकजन!

आदिमल, अन्धकार नाश केलिए ध्यान करो!

आप भय को नाश करके अन्त्यकालभय से विमुक्त हो जाओ!

17. प्रयत्न करने से भी

लक्ष्य तक न पहुँछे सभी मूढमत

नाश होने के लिए अन्धरहित

अभ्यास से जो सन्मार्ग सर्वत्र स्थिर रहने केलिए

हमारे स्वामी के प्रत्यक्ष होने का शुभसमय यही है देखिए!

साधारण नीन्द से उठने के जैसे मृतलग सभी

साक्षात उठने का समय अबसे शुरु होगा आप

अभ्यास से जानने केलिए शीघ्र आइए न पढा हु आपढाई

पढेंगे, अनुभव करेंगे, सुख पाएँगे।

18. सुख न जानकर दुःख को ही महत्प्रयत्नसे जानलिए लोकजन!

कपट जानलिया, पवित्र को क्यों नही जाने?

इह-पर दोनों को न जानलिया, क्या आपका उद्देश्य?

क्या करोगे मृत्यु के समय? किधर जाओगे? अहो!

अपने आपको न जानने वालें हे लोग! परमात्मा को जानकर अक्षयज्ञान

अमृतस्वरूप दर्शन करके अनुग्रह को पाएँगे,

मुझ से अनभिज्ञ सा है क्यों? मुझे जानते नही क्या?

सभी महात्मालोगों से पूजित अनुग्रहपरमयोगि के पुत्र मै ही हूँ।

19. मेरे वचन और वाक्य सब नायक के ही है।

विश्वास कीजिए हे जन! यही है शुभ मुहूर्त।

आकशवाणि कहा माणिक्यसभा मे नर्तन कारने वाला, हमारा

उत्तम के आगमन का प्रतीक्षा करके अनुग्रहवर पाएँगे।

आनन्द मधुरमय हृदय से उठरहा हूँ।आप

जानकर इधर आइए शीघ्र सिद्धिपाने केलिए।

सभी उपदेश किया करुणभावसे

जो मै अनुभव कर रहा उस आनन्द को आप भी पाइए!

20. प्रत्येकरूप से कहरहा हूँ सुनिए इधर देखिए!

वक्रमन सहित बन्दर जैसा लज्जितमानव

कलङ्कित आपसे एक प्रयोजन भी मै नही चाहता,

मेरा सत्यवचन को असत्यवचन न समझो।

अन्यपन्थ सभी झूठे है। उनमें मत जाओ।

"सिवम"एक ही वस्तु अनुभवसे जानलो!

अर्चन करो सूक्ष्मसभानर्तन को जानलो स्तुति करो

सिद्धि सब इसी दिन शीघ्र से पाइए!

21. पहूँचोऐक्य से। समरससन्मार्ग ही

पवित्रमार्ग, महत्मार्ग, सिद्धि सब इसी दिन पासकेंगे

जानलो। खाने-सोने केलिए जानलिए परन्तु

जगतसभी देखने लायक एक महत रहस्य को क्यों नही जाने?

जीवित काल मे मृत्यु है यह सब जानते। अहो!

मृत्यु आनेसे जड एक पलभी नही रुकेगा

सम्मत है आपको? आइए मरण को रोकने केलिए।

देखिए! दर्शन कीजिए अद्वितीयसूक्ष्मसभानर्तनको।

22. पूर्व किया दोष को क्षमासे अनुग्रहकरेंगे, सारूप्य से

दैविकनर्तनकरनेवाला महत्करूणा अनुग्रहमूर्ति को अन्तरङ्ग मे

सत ज्ञान से ध्यान करो! समरससन्मार्ग मे पहुँचो!

ऐसा आपको उपदेश कर रहाँ हूँ। हे भूजन! मुझे आप

अपमान करने पर भी आनन्द से ही स्वीकार करूँगा।

मन से भी दुःख नही पाऊँगा। मान सब रास्ते मे छोड दिया,

असत्य थोड़ा भी नही कहूँगासत्य ही

कह रहा हूँआप सब पवित्रपाने केलिए।

23. भोग आशाश्वत, ऐश्वर्य असत्य

नूतन कहना कुछ नही सूक्ष्मबुद्धिसे देखा हु आसचमानकर

भ्रमसहित हे लोकजन! अन्धकार लोक मे क्या मृत्यु सम्मत है?

मृत्यु बिन महज्जीवन जीने के लिए इधर आइए।

सत्वस्तु पाने केलिए शुद्धशिवसन्मार्ग पर स्थिर से

पहुँचिए सूक्ष्मसभामृत पीने केलिए। प्रियसहित

देवानुग्रह से सभी वर पासकेंगे

आप के साथ आनेवाले ही, रोकनेवाले कोई नही।

24. फिरजानलेंगे सोचकर थोडादेर रुके परन्तु

मृत्युनामक एकमहत्पापी आएगा अहो!

थोडा भी आप उसे न रोकसकेंगे।

समरससन्मार्ग बिना उसको

सामनाकर रोकनेवाले किसी लोक में भी कोई

नही है, सत्यवचन सुनिए हे लोकजन!

अज्ञान से पकडे हु एसबकुछ पकडेबिना छोडा हुआ हृदय

सर्वपकड को पकडलेगा, हमेशा केलिए मत्यु न पाओगे।

25. मृतदेह को लेजाने के समय क्यों आर्तनाद कर रहे? हे लोकजन!

मरणरहित महद्वर को आप क्यो नही पाएँगे?

आप भूलगये, वृद्धत्व रोग क्या आपको सम्मत है?

भूलकर भी इस का स्मरण से महात्मा का मन काम्प जाएगा देखिए!

श्रेयस्कर सन्मार्ग एक ही रोग वृद्धत्व और मरण को पास

न पहुँछेगाजानकर आइए इधर।इसी जन्म में

नित्यसत्यजीन पाएँगे महदानन्द का अनुभव करेंगे शीघ्र से।

26. सीधा वचन कह रहा हूँ ऐक्य से आपको,

मित्र हूँ आपका शतृ नही हे लोकजन!

विद्यावान और विद्यारहित का नाश देख रहे,

सभी इन्द्रियों नाश होने जैसा मृत्यु क्या आपको सम्मत हैं?

मेरा दिल थोडा भी सम्मत नही।

आपका मन पाषाण या क्रूर क्या? न जाने।

अभी इसको रोकदेंगे मुझसे मिलो!

मेरा मार्ग मृत्युनाशक सन्मार्ग।

27. सन्मार्ग महद्गुणवान प्रभु को, मुझे

संभालने वाला महत्पति को, अद्वितीयसभापति को

अच्छामार्ग मे प्रेरित कर सन्मार्गसंघ के,

बीच मे रखकर अनुग्रहामृतदिए नायक को

पापमार्गस्थ को भी ज्ञानदिए पुण्यवान को ज्ञानपूरण

सत्यवस्तुरूपसे स्थित हु आमहौषध को

असत्यमार्ग से रक्षा करके अनुग्रहालय मे नर्तनकरनेवाला

अनुग्रहमहज्योति को हे लोकजन! जानकर आइए।

28. लौकिकजीवनपापों से निवारित हृदय मे

सत्यरूप से बैठकर अनुग्रहदेनेवाला उत्तम सद्गुरु को

सामने होकर किसी के द्वारा जानने अपूर्व

नित्य आकाशवस्तु को सभीस्थर स्वयं होकर

चडने केलिए प्रेरित किया प्रकृतिसत्य ने

सर्वसमर्थत्व मुझे दिए मेरे पति को एकैकबन्धु

कहकर पहूँचो। हे लोकजन! स्तुतिकरो आनन्दसे

मनपूर्ण खुशी से पिघल कर यथार्थज्ञान से ध्यान करो!

अनुग्रहरूपमहज्ज्योति अनुग्रहरूपमहज्ज्योति।

अद्वितीयकरुणाज्योति अनुग्रहरूपमहज्ज्योति।।

Translated by Ashish Acharya and Vikas Chandra Jha from the book "Footsteps of saint Ramalingam" with permissionfrom the author Mr B Kamalakannan. (publisher : vanathi pathippkam, 2014).
Web: http://ramalingaperumanar.com/